आओ दुआएँ लेते चलें

करतार योगी

आओ दुआएँ लेते चलें, आओ दुआएँ देते चलें।
सब अपने हो जायेंगे, प्रेम की हवाएँ बहाते चलें।।

सबसे आसान यदि कुछ है तो उसे दुआ कहते हैं क्योंकि दुआओं के आदान-प्रदान में एक भी पैसा खर्च नही होता है, शक्ति और समय भी खर्च नही होता है। बावजूद इसके दुआओं के आदान-प्रदान से बहुत सारे अवरोध खड़े दिखाई दे रहे हैं। जब शिशु के रूप में व्यक्ति इस दुनिया में आता है तो उस समय वह सबसे बेहतरीन होता है, सर्वश्रेष्ठ, सर्वसुलभ और एक हंसता-खिलता संसार होता है। उसको सब अपनी दुआएँ देते हैं, अपनापन और प्यार देते हैं। लेकिन वह जैसे-जैसे उम्र के पायदानों की चढ़ाई शुरु करता है, वैसे-वैसे उसके मन-मस्तिष्क में उसके माता-पिता, परिजन, पिरचित, सगा-सम्बन्धी और मित्रगण अपनी-अपनी राय, विचार, अनुभव, सपने, लक्ष्य, रूढियां-परम्पराऐं, स्वार्थ, प्रभाव, स्वभाव और शक्ति उसके कोमल मस्तिष्क में भरनी शुरु कर देते हैं।

यही मूल कारण है कि उसके कोमल और पवित्र मन मस्तिष्क में झूठ-फरेब और सामाजिक विद्रुपताएँ घर करने लगती हैं और एक समय ऐसा आता है कि सभी खराब बातों का उसके मन-मस्तिष्क में स्थायी निवास हो जाता है, वे सब बातें वहाँ से हटाए भी नहीं हटती हैं, ऐसे में उसके आस-पास दुआओं के आदान-प्रदान का नामो निशान तक नहीं होता। कहा जाता है कि जहां दुआएं होती हैं, वहाँ जिंदगी भर दवाओं का काम नहीं पड़ता क्योंकि दुआओं में पूरे ब्रह्माण्ड की शक्ति होती है, दुआओं से जो सकारात्मक ऊर्जा का संचरण और संवाहन होता है वह व्यक्ति में उपस्थित मानवीय दुर्बलताओं और विद्रुपताओं को हटाकर सच्चाई-अच्छाई, ईमानदारी और इंसानियत की शाश्वतता भर देता है। आइए, जीवन को विशाल खुशहाल और हजारों साल और सबके लिए महनीय बनाने के लिए दुआएँ देते चलें और दुआएँ लेते चलें।

दुआ जिसकी ज़िंदगी का सार हो गया।
समझो कि ऐसा व्यक्ति संसार हो गया।।

साहित्यकार, मोटिवेशनल स्पीकर,
जयपुर